ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-4* May-2017
Innovation The Research Concept

कामकाजी महिलाओं की भूमिका एवं संघर्ष

कमलेश भारद्वाज
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
समाजशास्त्र विभाग,
एस0 डी0 पी0 जी0 कालेज,
गाजियाबाद

सारांश

परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं के द्वारा घर की चार दीवारी से बाहर निकल कर कोई भी आर्थिक कार्य करना सामाजिक प्रतिष्ठा के विरूद्ध माना जाता था। वर्तमान में महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। जिससे उनकी सामाजिक परिस्थिति परिवर्तित हो रही है। इस प्रस्थिति के साथ उनकी भूमिका निर्वहन में संघर्ष की स्थिति बनी हुई है। प्रस्तुत अध्ययन में महिलाओं की संघर्षपूर्ण स्थिति के कारणों एवं उनके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

मुख्य शब्द : प्रतिमानों, कार्योजन, परम्परागत और स्वावलम्बी ।

प्रस्तावना

स्वतन्त्रता एवं समानता के सांवैधानिक अधिकारों, बढ़ती हुई जनसंख्या, महिलाओं में बढ़ती हुई जागरूकता एवं शिक्षा तथा सुविधाओं और विलासता के साधनों की माँग ने महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनने के लिए प्रेरित किया है। आज वे घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर लगभग सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। जिससे उनकी परिस्थिति में परिवर्तन आ रहा हैं इस प्रस्थिति के साथ भूमिका निर्वाहन में वे अनेक कठिनाईयों का सामना कर रही हैं।

भारतीय समाज के इतिहास में महिला की स्थिति व स्थान में परिवर्तन होता रहा है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी थी उन्हें पुरूषों के समान शिक्षा, राजनीतिक, धर्म, सम्पत्ति आदि में अधिकार प्राप्त थे। उत्तर वैदिक काल में तथा इसके बाद के काल में महिलाओं की स्थिति गिरती चली गयी। इस काल में महिला एक वस्तु बन कर रही गयी जिसका उपयोग पुरूष अपनी इच्छानुसार किसी भी रूप में कर सकता था। मध्यकालीन युग में महिलाओं की स्थिति और अधिक सोचनीय हो गयी।

परिवर्तन प्रकृति का अनिवार्य नियम है। जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ श्रम विभाजन का स्वरूप भी बदलता गया और आधुनिक चुनौतीपूर्ण तथा भौतिकवादी युग में महिलाओं की रूचि पारिवारिक कार्यो के अतिरिक्त उन सभी कार्यो में भी होने लगी जिन पर कभी पुरूषों का एकाधिकार समझा जाता था। आज महिलाओं की सहभागिता तीव्र गति से बढ़ते हुए पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। कार्य या पेशे का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहॉ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज न की हो।

कामकाजी महिला शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिला के सन्दर्भ में किया जाता है अर्थात वे महिलाएं जो घरों के बाहर नियमित रूप से आर्थिक व व्यवसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती है। काम करने का अर्थ स्वयं काम करना ही नहीं, वरन दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन आदि देना भी सम्मिलित है।

आज के भौतिकवादी परिवेश में पत्नी का कामकाजी होना एक अनिवार्यता सी वन गयी हैं घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पति और पत्नी दोनों का ही कार्य करना आवश्यक हो गया है जिससे पत्नी की परम्परागत प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन आये हैं। घर से बाहर काम करने के कारण पत्नी को घर और बाहर दोनो ही क्षेत्रों की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है जिससे कभी–कभी ऐसी स्थिति भी आती है कि दोनों भूमिकाओं में संघर्ष उत्पन्न हो जाता है या एक पद से सम्बन्धित दायित्व का निर्वाह करते हुए दूसरे पद से सम्बन्धित दायित्वों का उचित रूप से निर्वाह नहीं हो पाता और महिलाएं अपनी भमिकाओं में संघर्ष का अनुभव करती है। ''भूमिका एक समूह में एक विशिष्ट पद से सम्बन्धित सामाजिक प्रत्याशाओं एवं व्यवहार प्रतिमानों का एक ऐसा योग है जिसमें कर्तव्यों एवं सुविधाओं दोनों का समावेश होता है। ''मध्यम वर्गीय परिवारों में महिलाएं परिवार के जीवन स्तर को सुधारने अथवा उसकी देखभाल या बढ़ते हुए निर्वाह व्यय में सहारा देने के लिए उद्यम करती

हैं। घर के बाहर जिन शर्तो और परिस्थितियों में पुरूष उद्यम करते हैं उन्हीं में महिलाएँ भी उद्यम करती हैं फिर भी वे घर में काम करने की जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं होती। उद्यम का दोहरा बोझ उनमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव उत्पन्न करता है। बहुत कम ही भाग्यशाली महिलाएं है जिन्हें घरेंलू उद्यमों में सहायता अथवा कुछ सहारा मिल पाता है। इस दोहरे बोझ का परिणाम यह होता है कि उनकी पदोन्नति में देर हो जाती है और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण नई नौकरियों के अवसरों को भी त्यागना पड़ता है।

भारतीय समाज में महिलाओं की संघर्षपूर्ण जीवनशैली का मूल्यांकन उनकी पारिवारिक भूमिका दायित्वों में ही सम्भव है। परिवार में महिलाओं की भूमिका माँ एवं पत्नी के रूप में महत्वपूर्ण होती है। परिवर्तनों के बावजूद महिलाओं को पारिवारिक भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए परम्परागत लैगिंक असमानता का भी सामना करना पड़ता है।

आज के समाज में महिलाएं सिर्फ लाभ की दृष्टि से उद्यम नहीं करती हैं वरन् अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करके, समाज में प्रतिष्ठा, स्वतन्त्र रहने की चाहत तथा स्वावलम्बी बनने के उद्देश्य से भी उद्यम करना चाहती हैं, जिसका परिणाम कभी–कभी ऐसा भी होता है कि घर के सदस्यों को उनके उद्यम करने पर परेशानी होने लगती है।

प्रमिला कपूर के अध्ययन से पता चलता है कि ''कामकाजी महिलाओं को स्वयं के द्वारा अर्जित धन को खर्च करने की स्वतन्त्रता नहीं होती है, उन्हें यह धन घर के सदस्यों को दे देना पडता है न देने पर घर में कलह या तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।''

दुबे का कथन है ''महिलाओं की प्रासंगिक आर्थिक स्वतन्त्रता के प्रति प्रगति को बहुंत से पुरूष उभयभावी के रूप में देखते हैं जिनमे कुछ पाश्चात्य शिक्षित भी शामिल हैं। एक कामकाजी पत्नी आर्थिक रूप से उपयोगी है, यदि वह उच्च पर काम करती है तो उसकी एक विशेष सामाजिक प्रस्थिति भी है लेकिन उसका दूसरे लोगों के साथ विशेषकर पुरूषों के साथ मिलना जुलना उचित नहीं समझा जाता। बाहर के कार्यो के कारण उसके व्यस्त रहने से परम्परागत घरेलू दायित्वों की कुछ अवहेलना होती है और उसकी इस अवहेलना के कारण प्रतिकूल प्रतिक्रिया दिखाई देती है। कामकाजी महिलाएं स्वयं भी अपनी दोहरी भूमिका के निर्वाह में कठिनाई अनुभव करती है और इनमे से कुछ तो अपनी नयी भूमिका के कुछ पुरूषोचित पहलुओं से पूरी तरह प्रसन्न नहीं हैं।

महिलाओं की नौकरी करने की जो लहर आयी है, उसका प्रभाव उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर तथा पारिवारिक सम्बन्धों पर पड़ता है। अब उसे एक ओर गृहणी और दूसरी ओर जीविकोपार्जन दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है। इस दोहरी भूमिका को निभाने में उसकी शक्ति और समय खर्च होता है। प्रायः इस विरोधी भूमिका को परस्पर विरोधी आवश्यकताओं के बीच जूझना पड़ता है, इस कारण से उसके पारिवारिक सम्बन्धों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। कामकाजी महिलाओं के पास गृहकार्य के लिए समय का अभाव होता है। एक ही समय में घर की व्यवस्था करना और नौकरी पर जाने की तैयारी करना आसानी से सम्भव नहीं होता है। पति को अपना स्वामी न मानकर एक मित्र की भॉति मानने की भावना इन महिलाओं में परिलक्षित होती है। परन्तु गृहकार्य में पतियों के द्वारा सहायता करने का प्रतिशत बहुत कम रहता है। अतः उनको गृहणी व नौकरी की भूमिका में, मॉ एवं व्यवसायी की भूमिका में एवं पत्नी तथा व्यवसायी की भूमिका में काफी भूमिका संघर्ष करना पड़ता है।

प्रत्येक कार्य संस्थान अपने सदस्यों से यह आशा करती है कि वे अपने कर्तव्यों को पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ निभायें। विशेषकर ऐसे संस्थान जो अपने–अपने सदस्यों को अच्छा वेतन देते हैं। साथ ही व्यवसायी का भी यह नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने संस्थान के प्रति ईमानदारी से कार्य करे। कामकाजी महिलाओं के समक्ष यह समस्या रहती है, कभी–कभी वे अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए भी अपना कार्य सन्तोषजनक रूप से नहीं कर पाती और परिवार तथा व्यवसाय के प्रति दोहरी नैतिक कर्तव्य भावना के कारण भूमिका संघर्ष हो जाता है। इसका मुख्य कारण उनका मातृत्व अवकाश लेना, बच्चों की बीमारी, गृह कार्य की अधिकता तथा उनका स्वतः अस्वस्थ्य रहना है।

परिवार के प्रति प्रतिबद्धता के साथ टकराव होने की वजह से महिलाएं पदोन्नति के लिए आवेदन नहीं करना चाहती अपितु कुछ महिलाएँ तो ऐसे काम को भी लेना नहीं चाहती जिसके लिए वे प्रशिक्षण ले चुकी हैं। सामाजिक वर्ग चाहे कोई भी क्यों न हो, हर वर्ग में यह एक विश्वास है कि महिला की नौकरी को पत्नी तथा माता की बुनियादी भूमिका में हस्तक्षेप या उसके साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिएं कला रानी ने अपने अध्ययन में बताया है कि ''कैसे कार्य करने वाली महिलाएं घर एवं बाहर की जिम्मेदारी को निभाती है और कैसे दोनों अवस्थाओं के कारण संघर्ष उत्पन्न होता है, अधिकतर महिलाएं अपनी पुरानी व्यवस्था पर जोर देती हैं। उनका मत है कि आवश्यकता पूर्ति हेतु जो स्त्री कार्योजन में आती है वह अधिक संघर्ष झेलती हैं ये अपने बच्चों तथा घर परिवार के बारे में अधिक चितिंत रहती हैं।''

बाहर के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण घर के परम्परागत दायित्वों की पूर्ति में कमी आती है जिसकी परिवार के सदस्यों द्वारा प्रतिकूल प्रतिक्रिया की जाती है। कामकाजी महिलाएं स्वयं भी अपनी दोहरी भूमिका के निर्वाह में कठिनाई का अनुभव करती हैं। इस दोहरी भूमिका निर्वहन में वे अपने लिए बिल्कुल समय नहीं निकाल पाती जिसका परिणाम होता है उनका शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ्य होना।

एक परम्परागत परिवार की सामाजिक संरचना में पति–पत्नी के आपसी सम्बन्धों के एक विशिष्ट ढॉचें में यह स्वीकार किया गया है कि परिवार में पुरूष का प्रभुत्व होगा और नारी उसके अधीनस्थ होगी। पति का स्थान पत्नी की अपेक्षा परिवार में ऊॅचा होगा। परिवार चाहे संयुक्त हो या एकाकी पत्नी को मुख्यतः विभिन्न भूमिकाओं के अनुरूप अपनी अपेक्षाओं व दायित्वों की पूर्ति में ही अपनी दिनचर्या पूरी करनी होती है। कार्यरत होने के

कारण उसे अपने व्यवसाय या नौकरी से सम्बन्धित अनेक भूमिकाओं का निर्वहन करना होता है। समस्या वहॉ गम्भीर हो जाती है जहाँ पति पत्नी को कार्य में बिल्कुल सहयोग नहीं करते क्योंकि वे इस जमी जमाई धारणा के समर्थक हैं कि घर गृहस्थी का कार्य केवल महिलाओं को ही करने चाहिए।

मातृत्व एक पूर्णकालिक कार्य है। कामकाजी महिलाएं जब कार्य के लिए घर से बाहर जाती हैं तो उनकी प्रथम वरीयता अपने बाहर के कार्य को ठीक प्रकार से करने की होती है। इस भूमिका को वरीयता देने से बच्चों की देखभाल उचित तरीके से नहीं कर पाती। परिवार के सदस्य जब बच्चों की देखभाल में उनकी सहायता नहीं करते हैं तो संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिससे वे पूर्णरूप से अपने कार्य व बच्चों के बीच सामंजस्य बिठाने मे असमर्थ रहती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. कामकाजी महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति का पता लगाना।
2. कामकाजी महिलाओं की भूमिका संघर्ष के प्रतिमानों का विश्लेषण करना।
3. आर्थिक स्वतन्त्रता एवं आत्म निर्भरता की दृष्टि से व्यवसाय जनित भूमिका एवं परम्परागत भूमिका के प्रति कार्यरत महिलाओं का दृष्टिकोण एवं समायोजन की अवस्थाओं का विश्लेषण करना।
4. कामकाजी महिलाओं की उनकी परम्परागत भूमिका के प्रति दृष्टिकोण ज्ञात करना।

निष्कर्ष

यह निर्विवाद सत्य है कि अधिकांश कामकाजी महिलाएँ अपने कार्य और भूमिका के बीच संघर्ष का अनुभव करती हैं। यह संघर्ष उनके व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है और वे दोनों में से किसी स्थान से भाग नहीं सकतीं अतः उन्हें सामंजस्य करना होता है। अधिकांश महिलाएं अपने से अत्यधिक समझौता करके परिवार और कार्यस्थल के बीच सामंजस्य करती हैं।

कामकाजी महिलाओं को कार्य के दौरान अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा परिवार के सदस्यों का सहयोग भी उन्हें या तो मिलता ही नहीं है या बहुत कम मिल पाता है। अतः जब तक घर गृहस्थी के कार्यो में कामकाजी महिलाओं की सहायता उनके पति व अन्य सदस्यों के द्वारा नहीं की जायेगी तब तक कामकाजी महिलाओं का कार्य का बोझ हलका नहीं होगा। अतः आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं के दायित्वों के प्रति पुरूष मानसिकता को परिवर्तित किया जाये अन्यथा कामकाजी महिलाओं को दोहरे कर्तव्यों का पालन करते हुए संघर्ष का सामना करना ही पड़ेगा।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. *आगवर्न एवं निम्कॉफ, सोशियोलॉजी पृष्ठ– 153–154*
2. *सक्सेना ऋतु डा0 शर्मा प्रभा, राधा कमल मुकर्जी चिन्तन परम्परा, महिला उद्यमियों की पारिवारिक भमिका एवं द्वन्द, जून 2014, पृष्ठ 79*
3. *दुबे एस0 सी0, मैन्स एण्ड वूमैन्स रोल्स इन इंडिया, वूमैन इन द न्यू एशिया, (संस्करण) बरबारा ई0 वार्ड, पेरिस, यूनेस्को, 1963, पृष्ठ 194–95*
4. *रानीकला, राधा कमल मुकर्जी चिन्तन परम्पा महिला उद्यमियों की पारिवारिक भमिका एवं द्वन्द जून 2014 पृष्ठ 79*